हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	20.3.24		

The Tribune

Krishi Mela concludes at agri varsity, more than 67K take part

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, MARCH 19

The two-day Krishi Mela organised for kharif season at the Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU) concluded here today.

A large number of farmers visited the fair to gain information about improved varieties, new techniques and technologies related to farming. The university authorities informed that around 67,360 farmers from Haryana, Punjab, Rajasthan, Uttar Pradesh and other states participated in the fair on both the days.

Vice-Chancellor Professor BR Kamboj while addressing the farmers, said drone technology has proven to be a modern method that saves time, labour and resources, which is helpful in reducing agricultural costs and increasing crop production. "The use of drones is helpful in getting regular information about the crops and developing more effective farming techniques. Drone technology can be used efficiently even in the changing weather conditions. It is also helpful in spraying pesticides, fertilisers and weedicides in inaccessible areas and uneven land," he said.

The V-C said drone technology is the most important in weed identification and management. "Surveys conducted through drones are ten times faster and more accurate than traditional surveys. Soil and field analysis can also be done using drones. Crop loss can be greatly reduced by timely spraying of agricultural chemicals as soon as the attack of insects and locusts is detected by drones equipped with a multispectral imagery system," he said. The V-C said the latest varieties and agricultural methods developed by the university will be reaching the farmers as quickly as possible through the Krishi Mela.

Talking about the challenges in the agriculture sector, the VC said the agriculture sector has been facing challenges like falling groundwater level, decrease in soil fertility, soil salinity, alkalinity and water logging situation, climate change, crop diversification and use of pesticides and excessive use of chemical fertilisers in crop production. "The agriculture scientists have been working to tackle these challenges so that farming can become remunerative occupation," he added.

A stall showcases agriculture products and byproducts in Hisar on Tuesday; and (below) winners of competitions in different categories pose with their certificates. TRIBUNE PHOTO

The HAU also organised the competition of progressive farmers groups, HAU departments and others.

WINNERS AT TWO EVENTS

Progressive Farmer Group

1st position Subash Kamboj

2nd position Dharmavir and Shribhagwan

3rd position Rajesh Kumar

Departments of HAU

1st position Department of Genetics and Plant breeding

2nd position Department of Community Science/Agri-tourism

3rd position Molecular biology and biotechnology

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	20.3.24		

THE TIMES OF INDIA

HAU Kharif fair: 67K farmers buy seeds worth ₹42 lakhs

TIMES NEWS NETWORK

Hisar: A total of 67,360 farmers from Haryana, including Delhi, Punjab, Rajasthan and Uttar Pradesh, and other states, participated in the two-day Kharif Agriculture Fair organised at Haryana Agricultural University, Hisar.

University vice-chancellor Professor B R Kamboj informed that farmers bought certified seeds of improved and recommended varieties of Kharif crops and vegetables worth about Rs 42.26 lakh, and seeds of fruit plants and vegetables worth about Rs 78,100 in the fair. Apart from seeds, farmers also purchased bio-fertilizer worth Rs 8,900 and agricultural literature worth Rs 20,000. On this occasion, farmers also took advantage of the arrangements made by the University for soil and water testing and they got a total of 273 samples tested, the VC said. HAU joint director (extension) Krishna Kumar Yadav said that a total of 248 stalls were set up in the agro-industrial exhibition organised in the fair. Agricultural technology, machines, equipment have been displayed at these stalls by universities and non-government agencies, he said.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	20.7.24	4	3-6

• एचएयू के दो दिवसीय कृषि मेला खरीफ का समापन, करीब 67360 किसान शामिल हुए

ड्रोन जैसी आधुनिक तकनीकों से कृषि को बनाया जा सकता है सुगम : प्रो. काम्बोज

भास्कर न्यूज | हिसार

ड्रोन तकनीक समय, श्रम व संसाधनों की बचत करने वाली एक आधुनिक तकनीक है। जो कृषि लागत को कम करने में व फसल उत्पादन बढ़ाने में सहायक है। ड्रोन का उपयोग अपनी फसलों के बारे में नियमित जानकारी प्राप्त करने और अधिक प्रभावी कृषि तकनीकों के विकास में सहायक है। यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में चल रहे दो दिवसीय कृषि मेला खरीफ के समापन समारोह को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कही। प्रश्नोत्तरी सत्र में किसान-वैज्ञानिकों के संवाद के अलावा विशेष तौर पर खेती में ड्रोन तकनीक के महत्व पर चर्चा की गई। मेले में दोनों दिन हरियाणा के अलावा पंजाब, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश व अन्य राज्यों से करीब 67360 किसान शामिल हुए।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने किसानों को कहा कि बदलते मौसम की स्थिति में भी ड्रोन तकनीक का कुशलता से प्रयोग कर सकते हैं। दुर्गम इलाकों में तथा असमतल भूमि में कीटनाशक, उर्वरकों व खरपतवार नाशक के छिड़काव में भी सहायक है। खरपतवार पहचान एवं प्रबंधन में ड्रोन तकनीक सबसे महत्वपूर्ण है। ड्रोन के माध्यम से किए सर्वेक्षण पारम्परिक सर्वेक्षण की तुलना में दस गुणा तेज व अधिक स्टीक होते हैं।

एचएयू कृषि मेला खरीफ-2024 में हरियाणा सहित दिल्ली, पंजाब, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश व अन्य राज्यों से करीब 67 हजार किसान शामिल हुए। विवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के अनुसार मेले में किसानों ने करीब 42.26 लाख रुपए के खरीफ फसलों व सब्जियों की उन्नत व सिफारिशशुदा किस्मों के प्रमाणित बीज तथा करीब 78 हजार 100 रुपए के फलदार पौधे व सब्जियों के बीज खरीदें। किसानों ने 8900 रुपए के जैव उर्वरक तथा 20 हजार रुपए का कृषि साहित्य भी खरीदा। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि मेले में मिट्टी पानी के 273 नमूने टेस्ट करवाए। संयुक्त निदेशक विस्तार डॉ. कृष्ण कुमार यादव ने बताया कि मेले में लगाई गई कृषि-औद्योगिक प्रदर्शनी किसानों के आकर्षण का विशेष केन्द्र रही। इस प्रदर्शनी में कुल 248 स्टॉलें लगाए गए हैं।

हिसार | हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली स्टॉलों के अधिकारियों व विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए।

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली स्टालों को दिए पुरस्कार

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि स्टॉलों में से सीड ग्रुप में शक्तिवर्धक सीड्स, आईएफएसए सीड्स, सुपर गोल्ड, करनाल व नाजीरडू सीड्स, सुपर सीड्स ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। इन्सेक्टिसाइडस व पेस्टीसाइडस ग्रुप में ग्वाला ऑरगेनिक, देवी क्रॉप साइंस/मेगामनी ऑरगेनिक, मिकाडो क्रॉप साइंस/इंदोरमा ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए। फर्टिलाइजर ग्रुप में यारा, इफको/एनएफएल, बायोस्टड इंडिया/आईकेएमएस बायोटेक को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। मशीनरी व ट्रैक्टर ग्रुप में फील्ड मार्शल, करतार ट्रेक्टरस/एमएसडब्ल्यू, रतिया, बीरबल चीमा/रेनबो को प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्रदान किया। फार्मेस्यूटिकल ग्रुप में टाइटेनिक फार्मा, एमडी बायोसीड्स/बायोडिसेंट फार्मा तथा वेबस्टर हेल्थकेयर को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रगतिशील किसान समूह में सुभाष कंबोज, धर्मवीर/श्रीभगवान व राजेश कुमार क्रमशः पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे। इसी प्रकार एचएयू के जेनेटिक्स एंड प्लांट ब्रीडिंग विभाग, कोम्युनिटी साइंस/एग्री टूरिजम, एमबीबी/माइक्रोबायोलॉजी को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	20.3.24	11	1-6

ड्रोन जैसी आधुनिक तकनीक के उपयोग से कृषि को बनाया जा सकता है सुगम : प्रो. कम्बोज

हकृवि के दो दिवसीय कृषि मेला (खरीफ) का समापन

हिसार, 19 मार्च (विरेन्द्र शर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में चल रहे दो दिवसीय कृषि मेला (खरीफ) आज संपन्न हुआ। मेले के अंतिम दिन भी काफी संख्या में किसान विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में, नई तकनीकें, प्रौद्योगिकियों को जानने के लिए पहुंचे। मेले में मुख्य तौर पर किसानों ने विभिन्न स्टॉलों पर तकनीकी जानकारी ली, उन्नत किस्मों के बीज खरीदे। साथ ही प्रश्नोत्तरी सत्र में किसान-वैज्ञानिकों के संवाद के अलावा विशेष तौर पर खेती में ड्रोन तकनीक के महत्व पर चर्चा की गई। मेले में दोनों दिन हरियाणा के अलावा पंजाब, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश व अन्य राज्यों से करीब 67360 किसान शामिल हुए। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि ड्रोन तकनीक समय, श्रम व संसाधनों की बचत करने वाली एक आधुनिक तकनीक है, जो कृषि लागत को कम करने में व फसल उत्पादन बढ़ाने में सहायक है। ड्रोन का उपयोग अपनी फसलों के बारे में नियमित जानकारी प्राप्त करने और अधिक प्रभावी कृषि तकनीकों के विकास में सहायक है। बदलते मौसम की स्थिति में भी ड्रोन तकनीक का कुशलता से प्रयोग कर सकते हैं। दुर्गम इलाकों में तथा असमतल भूमि में स्तर पर ड्रोन का उपयोग किया जा सकता है। मल्टी स्पेक्ट्रल इमेजरी सिस्टम से लैस ड्रोन द्वारा कीड़ों, टिड्डियों व सैनिक कीट के आक्रमण का पता लगते ही समय पर कृषि

हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली स्टॉलों के अधिकारियों व विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए।

कीटनाशक, उर्वरकों व खरपतवार नाशक के छिड़काव में भी सहायक है। खरपतवार पहचान एवं प्रबंधन में ड्रोन तकनीक सबसे महत्वपूर्ण है। ड्रोन के माध्यम से किए गए सर्वेक्षण पारम्परिक सर्वेक्षण की तुलना में दस गुणा तेज व अधिक स्टीक होते हैं। ड्रोन का उपयोग करके मिट्टी व खेत का विश्लेषण भी किया जा सकता है। कीट व बीमारियों से लडने के लिए बड़े रसायनों का छिड़काव करने से फसल के नुकसान को बहुत ही कम किया जा सकता है। प्रिसिजन फार्मिंग, जेनेटिक इंजीनियरिंग से लेकर जलवायु-स्मार्ट कृषि तथा कृषि से जुड़े अन्य डिजिटल तकनीक को सही तरीके से क्रियान्वित करने के लिए ड्रोन तकनीक बहुत ही सहायक सिद्ध होगी। उन्होंने बताया कि मेले के माध्यम से विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई नवीनतम किस्मों व कृषि पद्धतियों को जल्दी से जल्दी से किसानों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी, जिससे कि फसलों की पैदावार बढ़ेगी। वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र में आ रही चुनौतियों जैसे भू-जल के स्तर का गिरना, भूमि की उर्वरा शक्ति में कमी आना, भूमि की लवणता, क्षारीयता व जल भराव की स्थिति, जलवायु परिवर्तन, फसल विविधिकरण तथा फसल उत्पादन में कीटनाशक एवं रसायनिक उर्वरकों का अधिक प्रयोग शामिल है। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि स्टॉलों में से सीड ग्रुप में शक्तिवर्धक सीड्स/आईएफएसए सीड्स, सुपर गोल्ड, करनाल व नाजीरेडू सीड्स/सुपर सीड्स ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार, इन्सेक्टिसाइडस व पेस्टीसाइडस ग्रुप में ग्वाला ऑरगेनिक, देवी क्रॉप साइंस/मेगामनी ऑरगेनिक, मिकाडो क्रॉप साइंस/इंदोरमा ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए। फर्टिलाइजर ग्रुप में यारा, इफको/एनएफएल, बायोस्टड इंडिया/आईकेएमएस बायोटेक को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार, मशीनरी व ट्रेक्टर ग्रुप में फील्ड मार्शल, करतार ट्रेक्टरस/एमएसडब्ल्यू, रतिया, बीरबल चीमा/रेनबो को प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। फार्मेस्यूटिकल ग्रुप में टाइटेनिक फार्मा, एमडी बायोसीड्स/बायोडिसेंट फार्मा तथा वेक्सटर हेल्थकेयर को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रगतिशील किसान समूह में सुभाष कंबोज, धर्मवीर/श्रीभगवान व राजेश कुमार क्रमशः पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे। इसी प्रकार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के जेनेटिक्स एंड प्लांट ब्रीडिंग विभाग, कोम्युनिटी साइंस/एग्री टूरिजम, एमबीबी/माइक्रोबायोलॉजी को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार, सरकारी विभाग/एमएचयू/लुवास/एनजीओ में एमएचयू/आईएफएफडीसी, एचएसडीसी/नेशनल सीड्स, जिला विधिक सेवाएं/सरोज ग्रेवाल क्रमशः पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भूमि	20.3.24	1	5-8

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो दिवसीय कृषि मेले का संमापन

हरियाणा समेत पड़ोसी राज्यों के 67360 किसानों ने देखा कृषि मेला

- किसानों ने मेले में लगी स्टॉलों पर तकनीकी जानकारी ली, खरीदे उन्नत किस्मों के बीज
- ड्रोन जैसी आधुनिक तकनीकों के उपयोग से कृषि को बनाया जा सकता है सुगम : प्रो. काम्बोज

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में चल रहे दो दिवसीय कृषि मेला (खरीफ) आज संपन्न हुआ। मेले के अंतिम दिन भी काफी संख्या में किसान विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में, नई तकनीकें, प्रौद्योगिकियों को जानने के लिए पहुंचे। मेले में मुख्य तौर पर किसानों ने विभिन्न स्टॉलों पर तकनीकी जानकारी ली, उन्नत किस्मों के बीज खरीदे। साथ ही प्रश्नोत्तरी सत्र में किसान-वैज्ञानिकों के संवाद के अलावा विशेष तौर पर खेती में ड्रोन तकनीक के महत्व पर चर्चा की गई। मेले में दोनों दिन हरियाणा के अलावा पंजाब, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश व अन्य राज्यों से करीब 67360 किसान शामिल हुए।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि ड्रोन तकनीक समय, श्रम व संसाधनों की बचत करने वाली एक आधुनिक तकनीक है, जो कृषि लागत को कम करने में व फसल उत्पादन बढ़ाने में सहायक है। ड्रोन का उपयोग अपनी फसलों के बारे में नियमित जानकारी प्राप्त करने और अधिक प्रभावी कृषि तकनीकों के विकास में सहायक है। बदलते मौसम की स्थिति में भी ड्रोन तकनीक का कुशलता से प्रयोग कर सकते हैं। दुर्गम इलाकों में तथा असमतल भूमि में कीटनाशक, उर्वरकों व खरपतवार नाशक के छिडकाव में भी सहायक है। खरपतवार पहचान एवं प्रबंधन में ड्रोन तकनीक सबसे महत्वपूर्ण है।

हिसार। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली स्टॉलों के अधिकारियों व विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

फोटो : हरिभूमि

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली स्टालों को दिए पुरस्कार

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि स्टॉलों में से सीड ग्रुप में शक्तिवर्धक सीड्स/आईएफएसए सीड्स, सुपर गोल्ड, करनाल व नाजीरेडु सीड्स/सुपर सीड्स ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार, इन्सेक्टिसाइडस व पेस्टीसाइडस ग्रुप में ग्वाला ऑरगेनिक, देवी क्रॉप साइंस/मेगामनी ऑरगेनिक, मिकाडो क्रॉप साइंस/इंदेरमा ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए। फर्टिलाइजर ग्रुप में यारा, इफको/एनएफएल, बायोस्टड इंडिया/आईकेएमएस बायोटेक को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार, मशीनरी व ट्रेक्टर ग्रुप में फील्ड मार्शल, करतार ट्रेक्टरस/एमएसडब्ल्यू, रतिया, बीरबल चीमा/रेनबो को प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। फार्मेस्यूटिकल ग्रुप में टाइटेनिक फार्मा, एमडी बायोसीड्स/बायोडिसेंट फार्मा तथा वेक्सटर हेल्थकेयर को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रगतिशील किसान समूह में सुभाष कंबोज, धर्मवीर/श्रीभगवान व राजेश कुमार क्रमशः पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे। इसी प्रकार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के जेनेटिक्स एंड प्लांट ब्रीडिंग विभाग, कोम्युनिटी साइंस/एग्री टूरिजम, एमबीबी/माइक्रोबायोलॉजी को क्रमशः प्रथम/ द्वितीय व तृतीय पुरस्कार, सरकारी विभाग/एमएचयू/लुवास/एनजीओ में एमएचयू/आईएफएफडी सी., एचएसडीसी/नेशनल सीड्स, जिला विधिक सेवाएं/सरोज ग्रेवाल क्रमशः पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	20.3.24	4	5-6

हकृवि खरीफ कृषि मेला किसानों ने खरीदे 42.26 लाख रुपये के बीज

हिसार में हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले स्टॉल के अधिकारियों व विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए। -हप्र

हिसार, 19 मार्च (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय खरीफ कृषि मेला में हरियाणा सहित दिल्ली, पंजाब, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश व अन्यराज्यों से 67 हजार, 360 किसानों ने प्रतिभागिता की। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि मेले में किसानों ने करीब 42.26 लाख रुपये के खरीफ फसलों व सब्जियों की उन्नत व सिफारिशशुदा किस्मों के प्रमाणित बीज तथा करीब 78 हजार, 100 रुपये के फलदार पौधे व सब्जियों के बीज खरीदे। बीज के अलावा किसानों ने 8900 रुपये के जैव उर्वरक तथा 20 हजार रुपये का कृषि साहित्य भी खरीदा। इस अवसर पर किसानों ने विश्वविद्यालय की ओर से मिट्टी व पानी जांच के लिए की गई व्यवस्था का भी लाभ उठाया। संयुक्त निदेशक विस्तार डॉ. कृष्ण कुमार यादव ने बताया कि मेले में कृषि-औद्योगिक प्रदर्शनी में कुल 248 स्टॉल लगाई गई। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि मेले में किसानों को विवि के अनुसंधान फार्म का भ्रमण करवाकर उन्हें वैज्ञानिक विधि से उगाई गई फसलों के प्रदर्शन प्लॉट दिखाए गए।

उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए स्टॉल संचालकों को पुरस्कार

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि प्रगतिशील किसान समूह में सुभाष कंबोज, धर्मवीर/श्रीभगवान व राजेश कुमार क्रमश पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे। इसी प्रकार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के जेनेटिक्स एंड प्लांट ब्रीडिंग विभाग, कम्युनिटी साइंस/एग्री टूरिज्म, एमबीबी/माइक्रोबायोलॉजी को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार, सरकारी विभाग/एमएचयू/लुवास/एनजीओ में एमएचयू/आईएफएफडीसी, एचएसडीसी/नेशनल सीड्स, जिला विधिक सेवाएं/सरोज गेवाल क्रमशः पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	19.03.2024	--	--

ड्रोन जैसी आधुनिक तकनीकों के उपयोग से कृषि को बनाया जा सकता है सुगम : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हकृवि के दो दिवसीय कृषि मेला (खरीफ) का समापन

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली स्टॉलों के अधिकारियों व विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए।

सिटीपल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में चल रहे दो दिवसीय कृषि मेला (खरीफ) आज संपन्न हुआ। मेले के अंतिम दिन भी काफी संख्या में किसान विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में, नई तकनीकें, प्रौद्योगिकियों को जानने के लिए पहुंचे। मेले में मुख्य तौर पर किसानों ने विभिन्न स्टॉलों पर तकनीकी जानकारी ली, उन्नत किस्मों के बीज खरीदे। साथ ही प्रश्नोत्तरी सत्र में किसान-वैज्ञानिकों के संवाद के अलावा विशेष तौर पर खेती में ड्रोन तकनीक के महत्व पर चर्चा की गई। मेले में दोनों दिन हरियाणा के अलावा पंजाब, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश व अन्य राज्यों से करीब 67360 किसान शामिल हुए।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि ड्रोन तकनीक समय, श्रम व संसाधनों की बचत करने वाली एक आधुनिक तकनीक है, जो कृषि लागत को कम करने में व फसल उत्पादन बढ़ाने में सहायक है। ड्रोन का उपयोग अपनी फसलों के बारे में नियमित जानकारी प्राप्त करने और अधिक प्रभावी कृषि तकनीकों के विकास में सहायक है। बदलते मौसम की स्थिति में भी ड्रोन तकनीक का कुशलता से प्रयोग कर सकते है। दुर्गम इलाकों में तथा असमतल भूमि में कीटनाशक, उर्वरकों व खरपतवार नाशक के छिड़?ाव में भी सहायक है। खरपतवार पहचान एवं प्रबंधन में ड्रोन तकनीक सबसे महत्वपूर्ण है। ड्रोन के माध्यम से किए गए सर्वेक्षण पारम्परिक सर्वेक्षण की तुलना में दस गुना तेज व अधिक सटीक होते हैं। ड्रोन का उपयोग करके मिट्टी व खेत का विश्लेषण भी किया जा सकता है। कीट व बीमारियों से लड़ने के लिए बड़े स्तर पर ड्रोन का उपयोग किया जा सकता है।

मल्टी स्पेक्ट्रल इमेजरी सिस्टम से लैस ड्रोन द्वारा कीड़ों, टिड्डियों व सैनिक कीट के आक्रमण का पता लगाते ही समय पर कृषि रसायनों का छिड़?ाव करने से फसल के नुकसान को बहुत ही कम किया जा सकता है। प्रिसिजन फार्मिंग, जेनेटिक इंजीनियरिंग से लेकर जलवायु-स्मार्ट कृषि तथा कृषि से जुड़े अन्य डिजिटल तकनीक को सही तरीके से क्रियान्वित करने के लिए ड्रोन तकनीक बहुत ही सहायक सिद्ध होगी। उन्होंने बताया कि मेले के माध्यम से विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई नवीनतम किस्में व कृषि पद्धतियों को जल्दी से जल्दी से किसानों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी, जिससे कि फसलों की पैदावार बढ़ेगी। वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र में आ रही चुनौतियाँ जैसे भू-जल के स्तर का गिरना, भूमि की उर्वरा शक्ति में कमी आना, भूमि की लवणता, क्षारीयता व जल भराव की स्थिति, जलवायु परिवर्तन, फसल विविधिकरण तथा फसल उत्पादन में कीटनाशक एवं रसायनिक उर्वरकों का अधिक प्रयोग शामिल है।

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली स्टालों को दिए पुरस्कार

हिसार जिला निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि स्टॉलों में से सीड ग्रुप में अधिकर्षक सीड्स/ आईएफएसए सीड्स, सुपर गोल्ड, करनाल व नर्मदेश सीड्स/सुपर सीड्स ने क्रमश: प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार, इन्सेक्टिसाइड्स व पेस्टीसाइड्स ग्रुप में धानुका ऑर्गेनिक, देवी क्रॉप साइंस/ मैक्सवेल ऑर्गेनिक, सिंकाडोकोप साइंस/इंडिया ने क्रमश: प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। फर्टिलाइजर ग्रुप में यारा, इफको/ एनएफएल, बायोस्टेड इंडिया/ आईपीएल बायोटेक को क्रमश: प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार, मशीनरी व ट्रैक्टर ग्रुप में फील्ड मार्शल, करतार ट्रैक्टर्स/ एमएसएम, दतिया, बीरबल पीम/ऐलाके को प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। फार्मास्यूटिकल ग्रुप में वाइटैलिक्स फार्मा, एमडी बायोसीड्स/बायोसिंडिकेट फार्मा तथा वेन स्टार हेल्थकेयर को क्रमश: प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रगतिशील किसान समूह में सुभाष कंबोज, धर्मवीर/ बीजगाम व राजेश कुमार क्रमश: पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे। इसी प्रकार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के जेनेटिक्स एंड प्लांट ब्रीडिंग विभाग, कम्युनिटी साइंस/एग्री टूरिज्म, एमबीबी/माइक्रोबायोलॉजी को क्रमश: प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार, सरकारी विभाग/एनजीओ/संस्थान/एनजीओ में एचएयू/ आईसीएआर/ईडी, एचएसडीसी/नेशनल सीड्स, जिला विधिक सेवाएं/स्टेट लेवल क्रमश: पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष न्यूज	18.03.2024	--	--

ड्रोन तकनीक को अपनाने से कृषि लागत को कम करने के साथ-साथ संसाधनों की भी बचत होगी : प्रो. बी.आर. काम्बोज

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 19 मार्च : बदलते समय के साथ-साथ आज हमें कृषि क्षेत्र में कृषि क्रियाओं को समयानुसार क्रियान्वित करने में जुड़ी चुनौतियों व कमियों को कमी को देखते हुए ड्रोन तकनीक को अपनाना होगा। इस तकनीक को अपनाने से कृषि लागत को कम करने के साथ-साथ संसाधनों की भी बचत की जा सकती है। यह विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित कृषि मेला (खरीफ) के शुभारंभ अवसर पर बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले में विशिष्ट अतिथि के रूप में महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय, करनाल के कुलपति डॉ. सुरेश कुमार मल्होत्रा और गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई मौजूद रहे। इस बार मेले का मुख्य विषय खेती में ड्रोन का महत्व है।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने आह्वान किया कि कृषक समुदाय को नई-नई तकनीकों व प्रौद्योगिकियों के बारे में समयानुसार अपडेट करते रहना समय की मांग है। उन्होंने कहा कि खेती में ड्रोन तकनीक का महत्व तेजी से बढ़ता जा रहा है, क्योंकि आज के दौर में खाद्य सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण को संरक्षित रखना मुख्य चुनौतियां है। साथ ही किसानों द्वारा फसलों में कीटनाशक दवाइयों का अधिक प्रयोग करने से इंसान अनेक बीमारियों की चपेट में भी आ रहा है। उपरोक्त चुनौतियों से निपटना है तो किसानों को ड्रोन तकनीक को अपनाना होगा। क्योंकि ड्रोन के द्वारा कम समय में जल विलय उर्वरक, कीटनाशक, खरपतवार नाशक का छिड़काव समान तरीके से व सिफारिश के अनुसार आसानी से किया जा सकता है, जिससे कम लागत होने के साथ-साथ संसाधनों की भी बचत होगी।

हकृवि द्वारा आयोजित कृषि मेला (खरीफ) का शुभारंभ

मुख्यातिथि सहित अन्य अधिकारियों ने कृषि प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी को सराहा

कृषि मेला खरीफ में विश्वविद्यालय के सभी महाविद्यालयों की ओर से विभिन्न विषयों पर कृषि प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी लगाई गई, जिसमें विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में सहित आधुनिक तकनीकों व कृषि यंत्र शामिल रहे। मुख्यातिथि सहित अन्य अधिकारीगणों ने प्रदर्शनियों का अवलोकन किया। साथ ही वैज्ञानिकों व विद्यार्थियों के प्रयासों को सराहा। इस प्रदर्शनी में कृषि क्षेत्र से जुड़ी समस्याओं के हल के लिए कृषक-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम भी रखा गया, जिसमें कृषि वैज्ञानिकों व किसानों ने फसलों से संबंधित समस्याओं के हल विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से जाने।

मुख्यातिथि ने कृषि मेला खरीफ में महिलाओं की अधिक भागीदारी पर खुशी जताई। साथ ही कहा कि वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र के अंदर महिलाओं की भूमिका दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की भी प्रशंसा करते हुए कहा कि वे विभिन्न फसलों की उन्नत 44 किस्में अनुमोदित व विकसित कर कृषक समुदाय को आर्थिक मजबूती देने का काम कर रहे है, जिसकी बदौलत हमारा विश्वविद्यालय कृषि क्षेत्र में अनूठी पहचान बना रहा है। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा इजाद की गई अधिक पैदावार देने वाली किस्म, जिनमें सरसों की रोग प्रतिरोधी व पाले के प्रति सहनशील किस्म आरएच 725, गेहूं की अधिक उत्पादकता देने वाली किस्म डब्ल्यूएच 1270 का जिक्र करते हुए खरीफ फसलों में चारे वाली ज्वार की अधिक पैदावार देने वाली सीएसवी 53 एफ व एचजे 1514, बाजरे की जिंक व आयरन तत्व से भरपूर बायोफोर्टिफाइड किस्म एचएचबी 299 व एचएचबी 311 एवं मूंग की एमएच 421 किस्म के बारे में भी बताया।

महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय, करनाल के कुलपति डॉ. सुरेश कुमार मल्होत्रा ने बताया कि हरियाणा का किसान प्रगतिशील किसान है। अपने प्रयासों की बदौलत वह अन्य राज्यों के किसानों, प्रौद्योगिकी व नवाचारों के मुकाबले में अग्रणी आगे है। इसलिए किसान खाद्य सुरक्षा, खाद्य पदार्थ, जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण संरक्षण जैसी अनेक चुनौतियों का हल निकालने में अपनी अहम भूमिका अदा कर सकता है। किसानों व फसलों की मांग के मुकाबले उत्पादन कम है, जिसके कारण आयात करना पड़ता है। इस मांग को पूरा करने के लिए हमें खरीफ एवं रबी सीजन के अलावा, रबी सीजन के तुरंत बाद आने वाली गर्मी के मौसम में एक कम अवधि वाली फसल लेकर खेती को लाभदायक बनाने के बारे में भी प्रेरित किया। हकृवि कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में शिक्षा, विस्तार के क्षेत्र सराहनीय कार्य कर रहा है।

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने बताया कि फसलों की अधिक पैदावार लेने के लिए पर्यावरण का अनुकूल होना जरूरी है। उन्होंने यह भी कहा कि हमें फसलों के अवशेष जैसे धान की पराली को नहीं जलाना चाहिए। क्योंकि पराली जलाने से एक ओर भूमि की उपजाऊ शक्ति कम होती वहीं दूसरी ओर मित्र कीट एवं लाभदायक जीवाणु भी नष्ट हो जाते है। यदि फसल के अवशेष जलाने की बजाय किसान उसे खेत में ही समायोजित करें तो भूमि की उपजाऊ शक्ति बनी रहेगी व पर्यावरण संरक्षण होगा।

कार्यक्रम के दौरान मुख्यातिथि ने कृषि क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया। इसके अलावा उन्होंने दो पुस्तकों का विमोचन करते हुए संबंधित विभागों के वैज्ञानिकों को बधाई दी। कृषि मेला खरीफ में पहले दिन हरियाणा व अन्य राज्यों से करीब 40 हजार किसानों ने भाग लिया। मंच का संचालन हरियाणा कला परिषद, हिसार मंडल के अतिरिक्त निदेशक रामनिवास शर्मा ने किया। मेले में उपस्थित किसानों के मनोरंजन के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

हकृवि कृषि मेले में पहले दिन में करीब 40 हजार किसान हुए शामिल

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में चल रहे दो दिवसीय कृषि मेला खरीफ -2024 में आज पहले दिन किसानों की भारी चहल-पहल रही। मेले में पहले दिन हरियाणा सहित दिल्ली, पंजाब, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश राज्यों से करीब 40 हजार किसान शामिल हुए। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के अनुसार मेले के पहले दिन में किसानों ने करीब 21.08 लाख रुपये के खरीफ फसलों व सब्जियों की उन्नत व सिफारिशशुदा किस्मों के प्रमाणित बीज तथा करीब 46 हजार 600 रुपये के फलदार पौधे व सब्जियों के बीज खरीदे। उल्लेखनीय है कि किसानों को आगामी खरीफ मौसम की फसलों व सब्जियों के बीज तथा फलों की नर्सरी उपलब्ध करवाने के लिए विश्वविद्यालय ने मेला स्थल पर सरकारी बीज एजेंसियों के सहयोग से बीज बिक्री की व्यापक व्यवस्था की थी। बीज के अलावा किसानों ने 6500 रुपये के जैव उर्वरक तथा 13 हजार रुपये का कृषि साहित्य भी खरीदा। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि मेले में किसानों को विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म का भ्रमण करवाकर उन्हें वैज्ञानिक विधि से उगाई गई फसलों के प्रदर्शन प्लॉट दिखाए जा रहे हैं तथा उन्हें जैविक व प्राकृतिक खेती, खेती में प्राकृतिक संसाधन संरक्षण, कृषि उत्पादन व गुणवत्ता बढ़ाने व फसल लागत कम करने संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां दी जा रही है। इस अवसर पर किसानों ने विश्वविद्यालय की ओर से मिट्टी व पानी जांच के लिए की गई व्यवस्था का भी लाभ उठाया और उन्होंने कुल 168 नमूने टैस्ट करवाए। इनके अतिरिक्त किसानों ने प्रश्नोत्तरी सभाओं में भाग लेकर वैज्ञानिकों से कृषि व पशुपालन संबंधी अपनी समस्याओं एवं शंकाओं को दूर किया तथा उनके लिए आयोजित हरियाणवी सांस्कृतिक कार्यक्रम में मनोरंजन किया। संयुक्त निदेशक विस्तार डॉ. कृष्ण कुमार यादव ने बताया कि मेले में लगाई गई कृषि-औद्योगिक प्रदर्शनी किसानों के आकर्षण का विशेष केन्द्र रही। इस प्रदर्शनी में कुल 248 स्टॉलें लगाए गए है। इन स्टॉलों पर विश्वविद्यालय तथा गैरसरकारी एजेंसियों व मल्टीनैशनल कंपनियों द्वारा कृषि प्रौद्योगिकी, मशीनें, यंत्र आदि प्रदर्शित किए गए है, जिन पर किसानों की भारी भीड़ रही।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स न्यूज	19.03.2024	--	--

हकृवि कृषि मेले में पहले दिन में करीब 40 हजार किसान हुए शामिल

हिसार (चिराग टाइम्स)

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में चल रहे दो दिवसीय कृषि मेला खरीफ -2024 में आज पहले दिन किसानों की भारी गहमा-गहमी रही। मेले में पहले दिन हरियाणा सहित दिल्ली, पंजाब, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश राज्यों से करीब 40 हजार किसान शामिल हुए।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के अनुसार मेले के पहले दिन में किसानों ने करीब 21.08 लाख रुपये के खरीफ फसलों व सब्जियों की उन्नत व सिफारिशशुदा किस्मों के प्रमाणित बीज तथा करीब 46 हजार 600 रुपये के फलदार पौधे व सब्जियों के बीज खरीदें। उल्लेखनीय है कि किसानों को आगामी खरीफ मौसम की फसलों व सब्जियों के बीज तथा फलों की नर्सरी उपलब्ध करवाने के लिए विश्वविद्यालय ने मेला स्थल पर सरकारी बीज एजेंसियों के सहयोग से बीज बिक्री की पर्याप्त व्यवस्था की थी। बीज के अलावा किसानों ने 6500 रुपये के जैव उर्वरक तथा 13 हज़ार रुपये का कृषि साहित्य भी खरीदा।

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि मेले में किसानों को विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म का भ्रमण करवाकर उन्हें वैज्ञानिक विधि से उगाई गई फसलों के प्रदर्शन प्लॉट दिखाए जा रहे हैं तथा उन्हें जैविक व प्राकृतिक खेती, खेती में प्राकृतिक संसाधन संरक्षण, कृषि उत्पादन व गुणवत्ता बढ़ाने व फसल लागत कम करने संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां दी जा रही है। इस अवसर पर किसानों ने विश्वविद्यालय की ओर से मिट्टी व पानी जांच के लिए की गई व्यवस्था का भी लाभ उठाया और उन्होंने कुल 168 नमूने टैस्ट करवाए। इनके अतिरिक्त किसानों ने प्रक्षेत्रनरी सभाओं में भाग लेकर वैज्ञानिकों से कृषि व पशुपालन संबंधी अपनी समस्याओं एवं शंकाओं को दूर किया तथा उनके लिए आयोजित हरियाणवी सांस्कृतिक कार्यक्रम में मनोरंजन किया।

संयुक्त निदेशक विस्तार डॉ. कृष्ण कुमार यादव ने बताया कि मेले में लगाई गई कृषि-औद्योगिक प्रदर्शनी किसानों के आकर्षण का विशेष केन्द्र रही। इस प्रदर्शनी में कुल 248 स्टॉलें लगाए गए है। इन स्टॉलों पर विश्वविद्यालय तथा गैरसरकारी एजेंसियों व मल्टीनैशनल कंपनियों द्वारा कृषि प्रौद्योगिकी, मशीनें, यन्त्र आदि प्रदर्शित किए गए हैं, जिन पर किसानों की भारी भीड़ रही।

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	20.3.25	4	1-6

हरियाणा सहित अन्य राज्यों से आए किसानों ने फसलों की उन्नत किस्में व नई तकनीकों की ली जानकारी

करीब 67360 किसान हुए शामिल, कृषि वैज्ञानिकों के साथ खेती में ड्रोन तकनीक के महत्व पर चर्चा की

हिसार, 19 मार्च (राठी): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में चल रहे 2 दिवसीय कृषि मेला (खरीफ) मंगलवार को संपन्न हुआ। मेले के अंतिम दिन भी काफी संख्या में किसान विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में, नई तकनीकें, प्रौद्योगिकियों को जानने के लिए पहुंचे। साथ ही प्रश्नोत्तरी सत्र में किसान-वैज्ञानिकों के संवाद के अलावा विशेष तौर पर खेती में ड्रोन तकनीक के महत्व पर चर्चा की गई। मेले में दोनों दिन हरियाणा के अलावा पंजाब, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश व अन्य राज्यों से करीब 67360 किसान शामिल हुए।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के अनुसार मेले में किसानों ने करीब 42.26 लाख रुपए के खरीफ फसलों व सब्जियों की उन्नत व सिफारिशशुदा किस्मों के प्रमाणित बीज तथा करीब 78 हजार 100 रुपए के फलदार पौधे व सब्जियों के बीज खरीदें। उल्लेखनीय है कि किसानों को आगामी खरीफ मौसम की फसलों व सब्जियों के बीज तथा फलों की नर्सरी उपलब्ध करवाने के लिए विश्वविद्यालय ने मेला स्थल पर सरकारी बीज एजेंसियों के सहयोग से बीज बिक्री की पर्याप्त व्यवस्था की थी। बीज के अलावा किसानों ने 8900 रुपए के जैव ऊर्वरक तथा 20 हजार रुपए का कृषि साहित्य भी खरीदा। कृषि मेले में किसानों के लिए गेहूं की 1207 किस्म सबसे अधिक डिमांड में रही। इस अवसर पर किसानों ने विश्वविद्यालय की ओर से मिट्टी व पानी जांच के लिए की गई व्यवस्था का भी लाभ उठाया और उन्होंने कुल 273 नमूने टैस्ट करवाए। इनके अतिरिक्त किसानों ने प्रश्नोत्तरी सभाओं में भाग लेकर वैज्ञानिकों से कृषि व पशुपालन संबंधी अपनी समस्याओं एवं शंकाओं को दूर किया। इस दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली स्टाल संचालकों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले अधिकारियों व विद्यार्थियों को सम्मानित करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

कृषि मेले में पहुंचे किसान।

अनुसंधान फार्म का करवाया भ्रमण

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि मेले में किसानों को विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म का भ्रमण करवाकर उन्हें वैज्ञानिक विधि से उगाई गई फसलों के प्रदर्शन प्लॉट दिखाए जा रहे हैं तथा उन्हें जैविक व प्राकृतिक खेती, खेती में प्राकृतिक संसाधन संरक्षण, कृषि उत्पादन व गुणवत्ता बढ़ाने व फसलें लागत कम करने संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां दी जा रही हैं।

आधुनिक तकनीकों से कृषि बनेगी सुगम : प्रो. काम्बोज

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि ड्रोन तकनीक समय, श्रम व संसाधनों की बचत करने वाली एक आधुनिक तकनीक है, जो कृषि लागत को कम करने में व फसल उत्पादन बढ़ाने में सहायक है। ड्रोन का उपयोग अपनी फसलों के बारे में नियमित जानकारी प्राप्त करने और अधिक प्रभावी कृषि तकनीकों के विकास में सहायक है।

उन्होंने कहा कि बदलते मौसम की स्थिति में भी ड्रोन तकनीक का कुशलता से प्रयोग कर सकते हैं। दुर्गम इलाकों में तथा असमतल भूमि में कीटनाशक, उर्वरकों व खरपतवार नाशक के छिड़काव में भी सहायक है। खरपतवार पहचान एवं प्रबंधन में ड्रोन तकनीक सबसे महत्वपूर्ण है। ड्रोन के माध्यम से किए गए सर्वेक्षण पारम्परिक सर्वेक्षण की तुलना में दस गुणा तेज व अधिक स्टीक होते हैं। ड्रोन का उपयोग करके मिट्टी व खेत का विश्लेषण भी किया जा सकता है। कीट व बीमारियों से लड़ने के लिए बड़े स्तर पर ड्रोन का उपयोग किया जा सकता है। मल्टी स्पेक्ट्रल इमेजरी सिस्टम से लैस ड्रोन द्वारा कीड़ों, टिड्डियों व सैनिक कीट के आक्रमण का पता लगते ही समय पर कृषि रसायनों का छिड़काव करने से फसल के नुक्सान को बहुत ही कम किया जा सकता है।

प्रिसिजन फार्मिंग, जैनेटिक इंजीनियरिंग से लेकर जलवायु-स्मार्ट कृषि तथा कृषि से जुड़े अन्य डिजिटल तकनीक को सही तरीके से क्रियान्वित करने के लिए ड्रोन तकनीक बहुत ही सहायक सिद्ध होगी। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र में आ रही चुनौतियां जैसे भू-जल के स्तर का गिरना, भूमि की ऊर्वरा शक्ति में कमी आना, भूमि की लवणता, क्षारीयता व जल भराव की स्थिति, जलवायु परिवर्तन, फसल विविधिकरण तथा फसल उत्पादन में कीटनाशक एवं रसायनिक ऊर्वरकों का अधिक प्रयोग शामिल है।

हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	20.3.24	2	1-5

एचएयू में दो दिवसीय कृषि मेले में 5 राज्यों के 67360 किसान पहुंचे, 42.26 लाख रुपये के बीज खरीदे

ड्रोन से खेती में लागत कम, मुनाफा अधिक

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में चल रहे दो दिवसीय कृषि मेला खरीफ-2024 में अंतिम दिन 37 हजार किसान पहुंचे। दो दिन में हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश व अन्य राज्यों से करीब 67360 किसान शामिल हुए। किसानों ने करीब 42.26 लाख रुपये के बीज, 78100 रुपये के फलदार पौधे व सब्जियों के बीज खरीदे।

किसानों ने 8900 रुपये के जैव उर्वरक व 20 हजार रुपये का कृषि साहित्य भी खरीदा। किसानों ने सोलर पावर प्लांट, ड्रोन को लेकर सबसे अधिक जानकारी ली। कुलपति प्रो. कांबोज ने बताया कि ड्रोन से खेती की लागत कम होगी और मुनाफा बढ़ेगा। इसके अलावा 90 मण प्रति एकड़ की उपज देने वाली गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 के बारे में किसानों ने जानकारी ली।

भू जल स्तर का गिरना चिंताजनक

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि मेले के माध्यम से विश्वविद्यालय की ओर से विकसित की गई नवीनतम किस्मों व कृषि पद्धतियों को जल्दी से जल्दी किसानों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी, इससे फसलों की पैदावार बढ़ेगी। वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र में आ रही चुनौतियां जैसे भू-जल के स्तर का गिरना, भूमि की उर्वरा शक्ति में कमी आना, भूमि की लवणता, क्षारीयता व जल भराव की स्थिति, जलवायु परिवर्तन, फसल विविधिकरण व फसल उत्पादन में कीटनाशक एवं रसायनिक उर्वरकों का अधिक प्रयोग शामिल है।

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि मेले में किसानों को विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म का भ्रमण करवाकर उन्हें वैज्ञानिक विधि से उगाई गई फसलों के प्रदर्शन प्लॉट दिखाए। उन्हें जैविक व प्राकृतिक खेती, खेती में प्राकृतिक संसाधन संरक्षण, कृषि उत्पादन व गुणवत्ता बढ़ाने व फसल लागत कम करने संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां दी जा रही है। विश्वविद्यालय की ओर से लगाए गए स्टाल में 273 नमूने टेस्ट करवाए। इनके अतिरिक्त किसानों ने प्रश्नोत्तरी सभाओं में भाग लेकर वैज्ञानिकों से कृषि व पशुपालन संबंधी अपनी समस्याओं एवं शंकाओं को दूर किया। संयुक्त निदेशक विस्तार डॉ. कृष्ण कुमार यादव ने बताया कि कृषि-औद्योगिक प्रदर्शनी किसानों के आकर्षण का विशेष केंद्र रही। प्रदर्शनी में कुल 248 स्टॉल लगाई गईं। प्रश्नोत्तरी सत्र में किसान-वैज्ञानिकों के संवाद के अलावा विशेष तौर पर खेती में ड्रोन तकनीक के महत्व पर चर्चा की गई।

एचएयू में आयोजित कृषि मेले में लगी स्टॉल पर जानकारी लेते किसान। संवाद

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली स्टालों को दिए पुरस्कार

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि स्टॉल में से सीड ग्रुप में शक्तिवर्धक सीड्स/आईएफएसए सीड्स को प्रथम स्थान मिला। नाजीरेड् सीड्स/सुपर सीड्स ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। फर्टिलाइजर ग्रुप में यारा, इफको/एनएफएल, बायोस्टड इंडिया/आईकेएमएस बायोटेक को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

प्रगतिशील किसान समूह में सुभाष बना विजेता : प्रगतिशील किसान समूह में सुभाष कांबोज को पहला, धर्मवीर सिंह को दूसरा, श्रीभगवान व राजेश कुमार तीसरे स्थान पर रहे। जेनेटिक्स एंड प्लांट ब्रीडिंग विभाग, कोम्युनिटी साईस/एग्री टूरिजम, एमबीबी/माइक्रोबायोलॉजी को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार, सरकारी विभाग/एमएचयू/लुवास/एनजीओ में एमएचयू/आईएफएफडीसी, एचएसडीसी/ नेस्ले सीड्स, जिला विधिक सेवाएं/सरोज ग्रेवाल क्रमशः पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे।

एचएयू में कृषि मेले में बीज की खरीदारी कर घर जाते किसान। संवाद

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	20.3.24	4	1-6

आधुनिक तकनीक से कृषि बन सकती सुगम : काम्बोज

हकृवि का दो दिवसीय कृषि मेला संपन्न, कहा- ड्रोन जैसी आधुनिक तकनीक से श्रम, समय और संसाधनों की होती है बचत

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में चल रहे दो दिवसीय कृषि मेला (खरीफ) मंगलवार को खत्म हो गया। इसमें किसान विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में, नई तकनीकें, प्रौद्योगिकियों को जानने के लिए पहुंचे।

प्रश्नोत्तरी सत्र में किसान-वैज्ञानिकों के संवाद के अलावा विशेष तौर पर खेती में ड्रोन तकनीक के महत्व पर चर्चा की गई। मेले में दोनों दिन हरियाणा के अलावा पंजाब, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश व अन्य राज्यों से करीब 67,360 किसान शामिल हुए।

हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली स्टालों के अधिकारियों व विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए। • पीआरओ

कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित मेले में कृषि यंत्र देखते किसान। • जागरण

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि ड्रोन तकनीक समय, श्रम व संसाधनों की बचत करने वाली एक आधुनिक तकनीक है, जो कृषि लागत को कम करने व फसल उत्पादन बढ़ाने में सहायक है। ड्रोन का उपयोग अपनी फसलों के बारे में नियमित जानकारी प्राप्त करने और अधिक प्रभावी कृषि तकनीकों के विकास में सहायक है। बदलते मौसम की स्थिति में भी ड्रोन तकनीक का कुशलता से प्रयोग कर सकते हैं। दुर्गम इलाकों में तथा असमतल भूमि में कीटनाशक, उर्वरकों व खरपतवार नाशक के छिड़काव में भी सहायक है।

खरपतवार पहचान एवं प्रबंधन में ड्रोन तकनीक सबसे महत्वपूर्ण है। ड्रोन के माध्यम से किए गए सर्वेक्षण पारंपरिक सर्वेक्षण की तुलना में दस गुणा तेज व अधिक स्टीक होते हैं। ड्रोन का उपयोग करके मिट्टी व खेत का विश्लेषण भी किया जा सकता है। कीट व बीमारियों से लड़ने के लिए बड़े स्तर पर ड्रोन का उपयोग किया जा सकता है। मल्टी स्पेक्ट्रल इमेजरी सिस्टम से लैस ड्रोन द्वारा कीड़ों, टिड्डियों व सैनिक कीट के आक्रमण का पता लगते ही समय पर कृषि रसायनों का छिड़काव करने से फसल के नुकसान को बहुत ही कम किया जा सकता है। प्रिसिजन फार्मिंग, जेनेटिक इंजीनियरिंग से लेकर जलवायु-स्मार्ट कृषि तथा कृषि से जुड़े अन्य डिजिटल तकनीक को सही तरीके से क्रियान्वित करने के लिए ड्रोन तकनीक बहुत ही सहायक सिद्ध होगी।

उन्होंने बताया कि मेले के माध्यम से विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई नवीनतम किस्मों व कृषि पद्धतियों को जल्दी से जल्दी से किसानों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी, जिससे कि फसलों की पैदावार बढ़ेगी। वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र में आ रही चुनौतियों जैसे भू-जल के स्तर का गिरना, भूमि की उर्वरा शक्ति में कमी आना, भूमि की लवणता, क्षारीयता व जल भराव की स्थिति, जलवायु परिवर्तन, फसल विविधिकरण तथा फसल उत्पादन में कीटनाशक एवं रसायनिक उर्वरकों का अधिक प्रयोग शामिल है। मेले में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली स्टालों को पुरस्कार भी दिए गए।

हकृवि कृषि मेले में करीब 67 हजार किसान हुए शामिल

दो दिवसीय कृषि मेला में हरियाणा सहित दिल्ली, पंजाब, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश व अन्य राज्यों से करीब 67 हजार किसान शामिल हुए। किसानों ने करीब 42.26 लाख के खरीफ फसलों व सब्जियों की उन्नत व सिफारिशशुदा किस्मों के प्रमाणित बीज तथा करीब 78 हजार के फलदार पौधे व सब्जियों के बीज खरीदे। किसानों ने 8900 के जैव उर्वरक तथा 20 हजार का कृषि साहित्य भी खरीदा। विस्तार शिक्षा निदेशक डा. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि मेले में किसानों को विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म का भ्रमण करवाकर उन्हें वैज्ञानिक विधि से उगाई गई फसलों के प्रदर्शन प्लाट दिखाए जा रहे हैं। किसानों ने मिट्टी व पानी जांच के लिए की गई व्यवस्था का भी लाभ उठाया और उन्होंने कुल 273 नमूने टेस्ट करवाए। संयुक्त निदेशक विस्तार डा. कृष्ण कुमार यादव ने बताया कि मेले में लगाई गई कृषि-औद्योगिक प्रदर्शनी किसानों के आकर्षण का विशेष केन्द्र रही।